डॉ. लाल के मिथक नाटक

अ नु क्र म णि का

प्रथम अध्याय : मिथक और नाटक। 1-31

मिथक : शब्द प्रयोग और परिभाषा।

मिथक : उत्पत्ति और विकास।

मिथक और समाज, मिथक और मनोविज्ञान, मिथक और इतिहास, मिथक और दर्शन, मिथक और धर्मनिरपेक्षता।

मिथक : प्रतीक विधान और बिंब विधान, मिथक और रूपक कथा, मिथक और भाषा।

मिथक और साहित्य का परस्पर संबंध।

नाटक का अन्य साहित्यिक विधाओं से पार्थक्य एवं महत्व।

नाटक में मिथक का प्रयोग।

निष्कर्ष।

द्वितीय अध्याय : डॉ. लाल के मिथक नाटकों की अवधारणा। 32-63

डॉ. लाल : जीवनवृत्त।

डॉ. लाल : का कृतित्व - नाटक, एकांकी संग्रह, उपन्यास, कथासंग्रह, अनुसंधान, सामयिक साहित्य, वैचारिक ग्रंथ।

डॉ. लाल के नाटकों के प्रेरणा स्त्रोत।

डॉ. लाल के नाटकों का सामान्य परिचय -

अ) डॉ. लाल के अमिथक नाटक -

1) अंधा कुआँ, 2) सुंदर रस, 3) मादा कॅक्टस, 4) सूखा सरोवर, 5) दर्पन 6) रातरानी, 7) रक्तकमल, 8) करफ्यू, 9) अब्दुल्ला दिवाना, 10) गुरू, 11) व्यक्तिगत, 12) संस्कारध्वज, 13) चतुर्भुज राक्षस, 14) सबरंग मोहभंग, 15) गंगामाटी, 16) सगुनपंछी

ब) डॉ. लाल के मिथक नाटक -

महाभारत कालीन - सूर्यमुख, यक्षप्रश्न, उत्तरयुद्ध

पौराणिक - नरसिंह कथा,

तंत्रकालीन - कलंकी,

महाभारतपुराणाभासित - मिस्टर अभिमन्यु, एक सत्य हरिश्चंद्र

डॉ. लाल के मिथक नाटकों की विशेषताएँ -

सूर्यमुख, यक्षप्रश्न, उत्तरयुद्ध, नरसिंह कथा, कलंकी, मिस्टर अभिमन्यु,

एक सत्य हरिश्चंद्र।

निष्कर्ष॥

64-117

तृतीय अध्याय : डॉ. लाल के मिथक नाटकों के पात्र।

नाटक में पात्र और चरित्र सृष्टि।

साधारण नाटक तथा मिथक नाटक की पात्र-परिकल्पना में अंतर।

हिंदी में मिथक नाटक परंपरा - जगदीशचंद्र माथुर, धर्मवीर भारती, मोहन राकेश,

सुरेन्द्र वर्मा, भीष्म सहानी, लक्ष्मीनारायण लाल।

डॉ. लाल के मिथक नाटकों के पात्र -

1) सूर्यमुख - प्रद्युम्न, वेनुरती, दुर्गपाल, रूक्मिणी।

2) उत्तरयुद्ध - विदूषक, द्रौपदी

3) यक्षप्रश्न - यक्ष, युधिष्ठिर

4) नरसिंह कथा - हिरण्यकशिपु, प्रल्हाद, हुताशन

5) कलंकी - हेरूप, अकुलक्षेम, तारा, कृषक

6) मिस्टर अभिमन्यु - राजन, आत्मन, गयादत्त, केजरीवाल, विमल

7) एक सत्य हरिश्चंद्र - लौका, देवधर, जीतन।

निष्कर्ष॥

चतुर्थ अध्याय : डॉ. लाल के मिथक नाटकों में आधुनिक युगबोध। 118-152

आधुनिकता : अर्थबोध और अर्थविस्तार - आधुनिकता और परंपरा, आधुनिकता और इतिहास बोध, आधुनिकता और मिथक नाटक।

डॉ. लाल के मिथक नाटकों में प्रतिबिंबित आधुनिकता -

अ) परिवर्तित सामाजिक मूल्य - सामंत वर्ग की प्रबलता, यौन समस्या, अनमेल विवाह

आ) राजनैतिक कुटिलता का पर्दाफाश।

इ) धार्मिक विश्वास के प्रति नयी दृष्टि - कर्मसिद्धांत।

ई) आर्थिक शोषण के प्रति असंतोष।

उ) नयी नैतिकता के नये प्रतिमान - राजनीति, युद्धनीति, धर्मनीति।

निष्कर्ष।

पंचम अध्याय : डॉ. लाल के मिथक नाटकों में रंगमंचीयता। 153-205

आधुनिक हिंदी नाटक और रंगमंच।

रंगमंच का महत्व - भारतीय और पाश्चात्य रंगमंच।

डॉ. लाल के मिथक नाटकों में दृश्यबंध अथवा दृश्ययोजना।

अभिनेयता।

रंगमंच की दृष्टि से पात्रों के क्रियाकलाप।

रंगदीपन अथवा प्रकाशयोजना तथा ध्वनिसंकेत।

नाट्यभाषा और संवाद योजना।

नाटककार द्वारा दिये गये रंगसंकेत।

निर्देशक के विचार।

पाठकीय / दर्शकीय संवेदना।

निष्कर्ष।

षष्ठ अध्याय : समापन। 206-210